हिंदी विकास संस्थान, दिल्ली

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड 2022

हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम

कक्षा-नौवीं

संकेत

- वर्ण विचार, शब्द विचार, पद
- लिपि, बोली एवं भाषा
- 'र' के विविध रूप (रेफ़ और पदेन)
- संयुक्त व्यंजन (वर्ण-विच्छेद)
- नुकता, आगत और निपात
- संधि (स्वर) समास एवं उसके भेद
- शब्द एवं उसके भेद
- मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ
- उपसर्ग - प्रत्यय
- संज्ञा एवं सर्वनाम, विशेषण
- क्रिया-क्रियाविशेषण
- समुच्चयबोधक, संबंधबोधक एवं विस्मयादिबोधक
- कारक
- लिंग-वचन
- अलंकार
- पर्यायवाची, विलोम
- समरूपी भिन्नार्थक शब्द एवं अनेकार्थी शब्द
- महासागरों के हिंदी में नाम
- वाक्यांशों के लिए एक शब्द
- वर्तमान में चल रहे अभियानों के नाम
- अपठित गद्यांश या काव्यांश

कृपया, ध्यान दें: इस प्रश्न-पत्रिका में दी गई सहायक सामग्री संकेत मात्र एवं अभ्यास के लिए है। अत: प्रतियोगी को रटवाने की अपेक्षा समझाने का प्रयास करें।

1. वर्ण

छोटी-से-छोटी भाषा की ध्वनि, जिसके टुकड़े नहीं हो सकते, वर्ण कहलाते हैं। इन वर्णों का व्यवस्थित रूप ही 'वर्णमाला' कहलाता है।

हिंदी वर्णमाला में वर्णों को दो रूपों में बाँटा गया है- स्वर तथा व्यंजन।

2. स्वर

जिन वर्णों का उच्चारण अन्य ध्वनियों की सहायता के बिना हो, उन्हें स्वर कहते हैं।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

अयोगवाह- अं अः

3. व्यंजन

व्यंजन वे वर्ण हैं, जो स्वरों की सहायता से बोले जाते हैं। नीचे स्वरयुक्त व्यंजन दिए गए हैं-

क	**ख**	**ग**	**घ**	**ङ**		
च	**छ**	**ज**	**झ**	**ञ**		
ट	**ठ**	**ड**	**ढ**	**ण**	**ड़**	**ढ़**
त	**थ**	**द**	**ध**	**न**		
प	**फ**	**ब**	**भ**	**म**		
य	**र**	**ल**	**व**	**श**		
	ष	**स**	**ह**			

(क) आगत स्वर - **ऑ**

(ख) नुकता वाले आगत व्यंजन - **ज़, फ़**

(ग) संयुक्त व्यंजन-दो व्यंजनों के मेल से बने व्यंजन **संयुक्त व्यंजन** कहलाते हैं। जैसेः- क्ष, त्र, ज्ञ, श्र ये चार संयुक्त व्यंजन हैं।

क् + ष = क्ष - कक्ष, दक्ष   त् + र = त्र - नेत्र, छात्र

ज् + ञ = ज्ञ - यज्ञ, सर्वज्ञ   श् + र = श्र - परिश्रम, आश्रम

4. 'र' के विविध रूप

- रेफ़ (जैसे: पर्व)
- पाई वाले व्यंजनों के साथ (जैसे: क्रम)
- बिना पाई वाले व्यंजनों के साथ (जैसे: राष्ट्र)

5. र और ऋ की मात्राओं में अंतर

- क् + ऋ = कृ, कृपा, कृष्ण
- क् + र = क्र, क्रय, विक्रय

6. शब्द विचार

शब्द वर्णों का सार्थक समूह होता है।

शब्द के निम्न भेद हैं:-

- संज्ञा
- सर्वनाम
- विशेषण
- क्रिया
- क्रियाविशेषण
- संबंधबोधक
- समुच्चयबोधक
- विस्मयादिबोधक

7. निपात

वह शब्द जिसका प्रयोग शब्द के रूप में किसी बात पर बल देने के लिए किया जाता हो, 'निपात' कहलाता है। जैसे:-ही, भी, तो

8. पद

सार्थक वर्ण-समूह 'शब्द' कहलाता है। जब इसका प्रयोग वाक्य में होता है, तो वह स्वतंत्र नहीं रहता। इसलिए वाक्य में प्रयुक्त होने पर शब्द 'पद' बन जाता है।

जैसे :- 'आम' एक शब्द है। पर, वाक्य में- 'गौरव आम खाता है' इस प्रकार प्रयुक्त होने पर 'आम' पद कहलाएगा। यहाँ यह व्याकरण के नियमों में बँध गया है।

9. लिंग

संज्ञा के जिस रूप से उसके पुरुष जाति या स्त्री जाति के होने का पता चलता है, उसे लिंग कहते हैं। इसके दो भेद हैं- पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग।

जैसे :-	आचार्य	-	आचार्या	पुत्र	-	पुत्री
	बकरा	-	बकरी	ग्वाला	-	ग्वालिन
	चिड़ा	-	चिड़िया	ठाकुर	-	ठकुराइन

10. वचन

संज्ञा और दूसरे विकारी शब्दों के जिस रूप से उनके एक या अनेक होने का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। वचन के दो भेद हैं- एकवचन तथा बहुवचन

जैसे :-	लड़का	-	लड़के	दरवाज़ा	-	दरवाज़े
	छात्र	-	छात्राएँ	कविता	-	कविताएँ
	कवि	-	कविगण	प्रजा	-	प्रजाजन

11. भाषा एवं लिपि

भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से हम अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। मनुष्य एक समाजिक प्राणी है। अपने विचार, भावनाओं एवं अनुभूतियों को वह भाषा के माध्यम से ही व्यक्त करता है।

मनुष्य अपने भावों तथा विचारों को दो प्रकार से प्रकट करता है-

1. बोलकर (मौखिक)
2. लिखकर (लिखित)

1. मौखिक भाषा:- मौखिक भाषा में मनुष्य अपने विचारों या मनोभावों को बोलकर प्रकट करते हैं। इस माध्यम का प्रयोग फ़िल्म,नाटक, संवाद एवं भाषण आदि में अधिक होता है।
2. लिखित भाषा:- भाषा के लिखित रूप में लिखकर या पढ़कर विचारों एवं मनोभावों का आदान-प्रदान किया जाता है। लिखित रूप भाषा का स्थायी माध्यम होता है। पुस्तकें इसी माध्यम में लिखी जाती हैं।

हिंदी तथा अन्य भाषाएँ- संसार में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। जैसे - अंग्रेज़ी, रूसी, जापानी, चीनी, अरबी, हिंदी, उर्दू आदि। हमारे भारत में भी अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। जैसे - बंगला, गुजराती, मराठी, उड़िया, तमिल, तेलुगु आदि। हिंदी भारत में सबसे अधिक बोली और समझी जाती है। हिंदी भाषा को संविधान में राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

12. लिपि

ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, वही 'लिपि' कहलाती है। प्रत्येक भाषा की अपनी-अलग लिपि होती है। हिंदी की लिपि 'देवनागरी' है। हिंदी के आलावा संस्कृत, मराठी, कॉकणी, नेपाली आदि भाषाएँ भी देवनागरी में लिखी जाती है।

13. बोली और भाषा

छोटे भूभाग में बोली जाने वाली 'बोली' कहलाती है। बोली को भाषा का प्रारंभिक रूप माना जाता है। बोली भाषा का स्थानीय रूप होती है। जब कोई बोली परिनिष्ठित होकर साहित्य की भाषा के पद पर आसीन हो जाती है । तो वह भाषा बन जाती है।

14. संधि

निकट स्थित दो वर्णों के मेल से होने वाला परिवर्तन **संधि** कहलाता है।

जैसे:- वाक्+ईश - वागीश, रमा+ईश - रमेश

संधि के मुख्यतः तीन भेद हैं-

1. स्वर संधि**:** = हिम+आलय = हिमालय
2. व्यंजन संधि**:** = सत्+जन= सज्जन
3. विसर्ग संधि**:** = नि:+धन=निर्धन

कृष्ण+अवतार- कृष्णावतार	शब्द+अर्थ - शब्दार्थ
हिम+आलय - हिमालय	भोजन+आलय - भोजनालय
घन+आनंद - घनानंद	कवि+इंद्र - कवींद्र

अति+इव - अतीव

महो+ईश - महीश

भानु+उदय - भानूदय

भू+उत्सर्ग - भूत्सर्ग

15. समास

शब्दों के मेल को समास कहते हैं। समास चार प्रकार के होते हैं-

1. **अव्ययीभाव समास-** अव्ययीसमास का पहला पद अव्यय होता है और प्रधान होता है। इससे बना समस्तपद भी अव्यय होता है। जैसे-

   यथाशक्ति- शक्ति के अनुसार

   आमरण- मरण तक

   प्रतिदिन- हर दिन

   प्रत्येक- हर एक

   हाथोंहाथ- हाथ-ही-हाथ में

2. **तत्पुरुष-** इसमें दूसरा पद प्रधान होता है। समास होने पर बीच की विभक्ति का लोप हो जाता है। जैसे-

   ग्रामगत- ग्राम को गया हुआ

   अकालपीड़ित- अकाल से पीड़ित

   प्रयोगशाला- प्रयोग के लिए शाला

   गुणहीन- गुणों से हीन

   आपबीती- आप पर बीती

3. **द्वंद्व समास-** द्वंद्व समास में पहला और दूसरा-दोनों पद प्रधान होते हैं। जैसे-

   दाल-रोटी - दाल और रोटी

   सुख-दुख - सुख और दुख

   भला-बुरा - भला और बुरा

   यश-अपयश - यश और अपयश

4. **बहुव्रीहि समास**– बहुव्रीहि समास में न पहला पद प्रधान होता है, न दूसरा। दोंनो पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं। जैसे–

त्रिलोचन– तीन आँखों वाला अर्थात (शिव)

एकदंत– एक दाँत वाला अर्थात (गणेश)

चतुर्भुज– चार भुजाओं वाला अर्थात (विष्णु)

गोपाल– गाय पालने वाला अर्थात (कृष्ण)

लंबोदर– लंबा उदर है जिसका अर्थात (गणेश)

5. **द्विगु समास**– जिस संख्या में पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है तथा समस्त समूह का अर्थ देता है, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे–

त्रिलोक– तीन लोकों का समाहार

दोपहर– दो पहरों का समाहार

सप्ताह– सात दिनों का समाहार

6. **कर्मधारय समास**– कर्मधारय में पहला पद विशेषण या उपमान होता है और दूसरा पद प्रधान होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। जैसे–

नीलगगन– नीला है जो गगन

नीलकंठ– नीला है जो कंठ

नीलांबर– नीला है जो अंबर

पीतांबर– पीला है जो अंबर

नीलगाय– नीली है जो गाय

16. अलंकार

'अलंकार' का अर्थ है–आभूषण। जिस प्रकार आभूषण शरीर की सुंदरता बढ़ाते हैं, उसी प्रकार अलंकार कविता की सुंदरता बढ़ाते हैं।

अलंकार के दो भेद हैं–

1. शब्दालंकार
2. अर्थालंकार

जब कविता में शब्दों के कारण सुंदरता बढ़ती है तो वह शब्दालंकार कहलाता है। जब किसी काम में अर्थ के आधार पर कविता की सुंदरता बढ़ती है तो वहाँ अर्थालंकार होता है।

1. **शब्दालंकार के भेद एवं उदाहरण**

अनुप्रास अलंकार – 'चारु चंद्र की चंचल किरणें' (वर्ण की आवृत्ति)

यमक अलंकार – 'काली घटा का घमंड घटा' (शब्द की आवृत्ति अर्थ अलग-अलग)

उपर्युक्त पंक्ति में 'घटा' शब्द दो बार आया है, पहली घटा का अर्थ है-बादल और दूसरी घटा का अर्थ है-कम होना।

श्लेष अलंकार- श्लेष अलंकार का अर्थ है-चिपका हुआ। जब किसी पंक्ति में कोई शब्द एक से अधिक अर्थ देता है, वहां 'श्लेष अलंकार' होता है।

मधुबन की छाती को देखो।
सूखी कितनी इसकी कलियाँ।

(कलियाँ- फूल का अविकसित रूप, यौवन से पूर्व की अवस्था)

2. **अर्थालंकार के भेद एवं उनके उदाहरण**

उपमा अलंकार – (उपमेय को उपमान के समान या मानना या तुलना करना)

'मखमल के झूले पड़े हाथी-सा टीला'

यहां पर हाथी-सा में उपमा अलंकार है।

रूपक अलंकार- (उपमेय को उपमान का पूर्ण रूप देना) ' आए महंत बसंत' वसंत को महंत का पूर्ण दर्जा दे दिया गया है।

उत्प्रेक्षा अलंकार- (उपमेय में उपमान की संभावना)

'सोहत ओढ़े पीत पटु, स्याम सलोने गात।
मनो नीलमणि सैल पर, आतप पर्‌यौ प्रभात।।'

यहां पर श्री कृष्ण के शरीर एवं पीले वस्त्रों में नीलमणि पर्वत एवं सूरज की सुबह की किरणों की संभावना को प्रकट किया गया है।

मानवीकरण- प्रकृति या वस्तु में मानवीय गुणों का देखना

'मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।'
'कमलों ने अंगड़ाई लेकर सुंदर आँखें खोलीं।'

उपर्युक्त पंक्तियों में मेघों का बन-ठन के सँवरना तथा कमलों का अंगड़ाई लेकर सुंदर आँखें खोलना मानवीकरण है।

अतिशयोक्ति- (अतिशयोक्ति का अर्थ है-बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करना)

'हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग।
लंका सगरी जल गई, गए निशाचर भाग।।'

स्पष्टीकरण-पूँछ में आग लगने से पहले लंका का जलना अतिशयोक्ति है।

17. संज्ञा

किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे-कनक, हिमानी, ताज़महल, जंगल, घबराहट, मिठास, बचपन आदि।

संज्ञा के तीन भेद हैं:-

(1) व्यक्तिवाचक संज्ञा- भारत, दिल्ली, महात्मा गाँधी, कल्पना चावला, रामायण, गीता आदि।

(2) जातिवाचक संज्ञा- मोटर साइकिल, कार, टीवी, पहाड़, तालाब, गाँव, लड़का, लड़की, घोड़ा, शेर।

(3) भाववाचक संज्ञा- गर्मी, सर्दी, मिठास, खटास, हरियाली, सुख।

18. सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है, उन्हें सर्वनाम कहते है। जैसे:-

मैं, तू, वह, आप, कोई, यह, वे, ये, हम, तुम, कुछ, कौन, क्या, जो, सो, उसका आदि सर्वनाम शब्द हैं।

सर्वनाम के छह भेद हैः-

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम - मैं, तुम, वे

(2) निश्चयवाचक सर्वनाम- ये, यह, इन्हें

(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम- कोई, किसी, किन्हीं

(4) संबंधवाचक सर्वनाम- जो, जिसे, जिन्हें, जिसको

(5) प्रश्नवाचक सर्वनाम- कौन, कब, क्या

(6) निजवाचक सर्वनाम- स्वयं, अपनेआप

19. विशेषण

जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताते हैं वे **विशेषण** कहलाते हैं। जैसे- सुंदर, मोटा, गोल, चार, कुछ भारी, हलका संज्ञा से पहले प्रयुक्त होने वाले शब्द-ये, वे, यह, वह आदि।

जिस शब्द की विशेषता बताई जाए वह **विशेष्य** कहलाता है जैसेः- 'मोटी पुस्तक' इसमें मोटी विशेषण है और पुस्तक विशेष्य।

विशेषण के चार भेद है-

(1) गुणवाचक विशेषण - छायादार पेड़, मोटा हाथी, वीर सैनिक, लाल कमीज़

(2) संख्यावाचक विशेषण - कुछ आम, तीन पुस्तकें, अनेक पक्षी, दो नोट

(3) परिमाणवाचक विशेषण - जग में दो किलो दूध रखा है, तीन मीटर कपड़ा दे दीजिए, कुछ चावल दे दीजिए, थोड़ा पानी पिला दीजिए

(4) सार्वनामिक विशेषण - ये फूल पूजा के लिए हैं, वह कुत्ता मोहित का है, वे तारे आकाश में सुंदर लगते हैं, यह लड़की खिलौने से खेल रही है।

20. क्रिया

काम के करने अथवा होने का बोध कराने वाले शब्दों (पदों) को **क्रिया** कहते हैं। जैसेः– सोना, खाना, पीना, सोचना, चलना, हँसना, रोना, देखना, सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, गाना, गुर्राना आदि।

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैंः–

अकर्मक क्रिया–वह हँस रहा है।

सकर्मक क्रिया–वह पुस्तक पढ़ रहा है।

21. क्रियाविशेषण

जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं वे **क्रियाविशेषण** कहलाते हैं। क्रियाविशेषण के चार भेद हैं।

रीतिवाचक क्रियाविशेषण - धीरे-धीरे, धीमे-धीमे

कालवाचक क्रियाविशेषण - आज, कल, अभी-अभी

स्थानवाचक क्रियाविशेषण - वहाँ, कहाँ, उधर

परिमाणवाचक क्रियाविशेषण - बहुत, कम

22. काल

क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने अथवा करने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।

काल के तीन भेद हैं–

भूतकाल– क्रिया के जिस रूप से पता चले कि काम हो चुका है, उसे भूतकाल कहते हैं। जैसेः– राम ने रावण को मारा।, भगवान कृष्ण ने अर्जुन का रथ चलाया था।, राम कल घर गया था।

वर्तमानकाल– क्रिया के जिस रूप से पता चले कि काम इस समय चल रहा है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। जैसेः– मोहन नाच रहा है।, हिरन दौड़ रहा है।, सुमन कहानी लिखती है।

भविष्यत् काल- क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में उसके किए जाने का या होने का बोध हो, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। जैसे:- हमारा विद्यालय कल बंद रहेगा।, अगले महीने दिल्ली में चुनाव होंगे।, राम कल घर होगा।

23. कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ ज्ञात होता है, उसे 'कारक' कहते हैं।

कारक के आठ भेद हैं-

कारक	**चिह्न (विभक्ति)**
कर्ता कारक	ने (जो क्रिया करें)
कर्म कारक	को (जिसपर क्रिया का फल पड़े)
करण कारक	से (के द्वारा) (जिस साधन से क्रिया हो)
संप्रदान कारक	के लिए, को (जिसके लिए क्रिया की जाए)
अपादान कारक	से (अलग होने के अर्थ में) (जिससे किसी के अलग होने का बोध हो।)
अधिकरण कारक	में, पर (जहाँ क्रिया घटित हो)
संबंध कारक	का, के, की; रा, रे, री; ना, ने नी (जो दो शब्दों का संबंध जोड़े)
संबोधन कारक	हे! अरे! (जब किसी को संबोधित किया जाए।)

24. समुच्चयबोधक

जो शब्द शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को मिलाते हैं, वे समुच्चयबोधक कहलाते हैं। जैसे:- या, अथवा, क्योंकि, परंतु, किंतु, ताकि, जबकि, तो आदि।

25. संबंधबोधक

जो शब्द वाक्य में आए हुए किसी शब्द का वाक्य के अन्य शब्द के साथ संबंध बतलाते हैं, वे संबंधबोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे- के बाद, के भीतर, के द्वारा, की ओर

26. विस्मयादिबोधक

जो शब्द हर्ष , शोक, घृणा, आश्चर्य जैसे भावों को प्रकट करते हैं उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं। जैसेः- अरे! आप कब आए?

निम्नलिखित छह शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं-

हर्षबोधक- आह!, वाह-वाह!, बहुत अच्छा!

शोकबोधक- हाय! बाप रे!, हे राम! नहीं-नहीं!

आश्चर्यबोधक- अरे!, क्या कहा!, कैसे! सच!

घृणाबोधक- छिः, थू-थू!

भयबोधक-ओह! बाप रे बाप!

संबोधनबोधक-अरे! हे!

चेतावनीसूचक- होशियार! खबरदार!, बचो!

प्रशंसासूचक- शाबाश!, वाह!, बहुत सुंदर!

27. उपसर्ग

जो शब्दांश शब्द से पहले लगकर नए-नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें 'उपसर्ग' कहते हैं।

उपसर्गों का अलग से कोई अर्थ नहीं होता। ये शब्द के साथ लगकर कोई-न-कोई अर्थ प्रकट अवश्य करते हैं। जैसेः-

	उपसर्ग	अर्थ	शब्द
1.	अ	(नहीं, अभाव)	अगम, अचल, अज्ञान।
2.	अति	(बहुत, अधिक या आगे)	अतिशय,अत्यधिक,अत्यंत।
3.	अधि	(ऊपर, श्रेष्ठ)	अधिकार, अधिपति,अध्यक्ष।
4.	अनु	(पीछे, समान, प्श्चात्, गौण)	अनुराग, अनुकरण,अनुरूप।
5.	अप	(हीन, अभाव, अनुचित)	अपकीर्ति, अपमान, उपकार।
6.	निर्, निस्	(बिना, रहित, विपरीत)	निस्संदेह, निर्मल, निर्वाह।

7.	परा	(अनादर, विपरीत, रहित)	पराजय, पराक्रम, पराभव।
8.	परि	(चारों ओर, अतिशय)	परिचय, परीक्षा, परिक्रमा।
9.	प्र	(अधिक, आगे, अतिशय)	प्रसिद्ध, प्रस्थान, प्रमाण।
10.	वि	(अभाव, भिन्नता, विशेष)	विजय, विशुद्ध, विनाश।
11.	सु	(अच्छा, शुभ, सहज)	सुकर्म, सुलभ, सुपुत्र।

28. प्रत्यय

जो शब्दांश शब्द के पीछे लगकर उसके अर्थ में बदलाव लाते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

शब्दांश अथवा प्रत्यय	शब्द	नया रूप
1. आ	भूख, प्यास	भूखा, प्यासा
2. आई	भला, बुरा	भलाई, बुराई
3. आऊ	चल, टिक	चलाऊ, टिकाऊ
4. आन	लग, ठक	लगान, थकान
5. आप	मिल	मिलाप
6. आलु	दया, श्रद्धा	दयालु, श्रद्धालु
7. आव	बह, फैल	बहाव, फैलाव
8. आहट	चिकना, कड़वा	चिकनाहट, कड़वाहट

29. मुहावरे

क्रम	मुहावरा	अर्थ
1.	आँखों में धूल झोंकना	धोखा देना
2.	अपना उल्लू सीधा करना	अपना मतलब निकालना
3.	आकाश से बातें करना	बहुत ऊँचा होना
4.	आकाश के तारे तोड़ना	असंभव कार्य करना

5.	आग बबूला होना	बहुत क्रोधित होना
6.	अक्ल पर पत्थर पड़ना	बुद्धि से काम न करना
7.	अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना	अपनी प्रशंसा स्वयं करना
8.	अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना	स्वयं अपनी हानि करना
9.	अपनी खिचड़ी अलग पकाना	सबसे अलग-रहना
10.	उँगली पर नचाना	अपने वश में करके मन चाहा काम कराना
11.	अपना-सा मुँह लेकर रह जाना	शर्मिंदा होना
12.	काम तमाम करना	मार डालना
13.	नौ-दो ग्यारह होना	भाग जाना
14.	टाँग अड़ाना	बाधा डालना
15.	उल्लू बनाना	दूसरों को मूर्ख बनाना

30. लोकोक्तियाँ

1. आम के आम गुठलियों के दाम - दुहरा लाभ कमाना।
2. उलटा चोर कोतवाल को डाँटे - दोषी का ही निर्दोष पर दोष मढ़ना।
3. एक और एक ग्यारह - एकता में बल है।
4. जिसकी लाठी उसकी भैंस - बलवान के ही सब अधिकार हैं।
5. घर का भेदी लंका ढाए - आपसी फूट विनाश का कारण बन जाती है।
6. एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है - एक बुरा व्यक्ति सारे समूह को बुरा बना देता है।
7. कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली - अधिक छोटे अधिक बड़े में कोई तुलना नहीं होती।

8. चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात - थोड़े ही दिन के मज़े, फिर वही परेशानियाँ।

31. वाक्य के भेद

अर्थ के आधार पर आठ प्रकार के वाक्य होते हैं-

1. विधानवाचक वाक्य-(साधारण) वंदना छठी कक्ष में पढ़ती है।
2. निषेधवाचक वाक्य-(मना करना) यहाँ पर गंदगी न फैलाएँ।
3. प्रश्नवाचक वाक्य-(प्रश्न पूछना) आप कहाँ रहते है?
4. आज्ञावाचक वाक्य-(आदेश) आप दौड़कर उसके पास जाओ।
5. विस्मयवाचक-(आश्चर्य) वाह-कितना सुंदर दृश्य है।
6. इच्छावाचक वाक्य-(इच्छा, कामना) आपकी यात्रा मंगलमय हो।
7. संदेहवाचक वाक्य-(संदेह) शायद आज वर्षा होगी।
8. संकेतवाचक वाक्य-(संकेत) यदि तुम मेहनत करोगे, तो अवश्य सफल होगे।

32. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

अनेक शब्द (वाक्यांश)		**एक शब्द**
जिसका आचरण अच्छा हो	-	सदाचारी
जो ईश्वर का न मानता हो	-	नास्तिक
जो पढ़ा लिखा न हो	-	निरक्षर
जिसका अंत न हो	-	अनंत
जो कभी बूढ़ा न हो	-	अजर
जो दिखाई न दे	-	अदृश्य
जो नियम के अनुसार न हो	-	अनियमित
वर्ष में एक बार होने वाला	-	वार्षिक

33. पर्यायवाची

किसी का शब्द समान अर्थ देने वाले शब्द को पर्यायवाची शब्द कहते हैं। जैसे:-

शब्द	पर्यायवाची
चंद्रमा	शशि, राकेश, मयंक
धरती	भूमि, भू, धरा
अग्नि	अनल, पावक, आग
पानी	नीर, वारि, जल
आकाश	गगन, अंबर, नभ
घर	गृह, सदन, भवन
पुत्र	बेटा, लड़का, सुत
अमृत	सुधा, पीयूष, सोम
मित्र	दोस्त, सखा, सहचर
स्त्री	नारी, औरत, महिला
फूल	पुष्प, सुमन, कुसुम
दिन	दिवा, दिवस, वार
माँ	माताश्री, माता, जननी
समुद्र	सिंधु, सागर, जलधि
भौंरा	भ्रमर, भृंग, मधुकर
जंगल	वन, कानन, अरण्य
वृक्ष	तरु, पादप, विटप
नदी	सरिता, सलिला, निर्झरिणी

34. विलोम

जो शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थ देते हैं, उन्हें विलोम या विपरीत शब्द कहते हैं।

जैसे:-

शब्द	**विलोम**	**शब्द**	**विलोम**
रात	दिन	कायर	वीर
धरती	आकाश	अपना	पराया
सच	झूठ	दूर	पास
अमीर	गरीब	शाकाहारी	मांसाहारी
दुख	सुख	शांत	अशांत
आदि	अंत	अंदर	बाहर
चतुर	मूर्ख	सरल	कठिन
ठंडा	गरम	देव	दानव
ईमानदार	बेईमान	दुर्बल	सबल
ऊपर	नीचे	प्राचीन	नवीन

35. समरूपी भिन्नार्थक शब्द

1. अनल (आग) – अनिल (हवा, वायु)
2. ओर (तरफ) – और (तथा)
3. कुल (वंश) – कूल (किनारा)
4. पानी (जल) – पाणि (हाथ)
5. शर (बाण) – सर (तालाब)
6. कंगाल (गरीब) – कंकाल (ठठरी)
7. अवधि (समय) – अवधी (अवध की भाषा)
8. नीरद (बादल) – नीरज (कमल)
9. प्रमाण (सबूत) – प्रणाम (नमस्कार)
10. कोश (शब्द-भंडार) – कोष (खजाना)

36. अनेकार्थक शब्द

जहाँ एक शब्द के दो या दो से अधिक अर्थ निकलते हों, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं। जैसेः-

1. अंक- गोद, नंबर, गिनती, चिह्न, संकेत, नाटक के अंक
2. अनंत- आकाश, अविनाशी, विष्णु,शेषनाग
3. अज- बकरा, ब्रह्मा, आत्मा, चंद्रमा
4. अर्थ- धन, एश्वर्य, प्रयोजन, हेतु, निमित्त, व्याख्या
5. अंबर- आकाश, कपड़ा, कपास, केसर
6. अरूण- लाल, सूर्य, सिंदूर, सोना
7. अवकाश - बीच का समय, अवसर, छुट्टी
8. आतुर- विकल, रोगी, उत्सुक
9. आराम- विश्राम, किसी रोग का दूर होना, सुख-चैन
10. उत्सर्ग- त्याग, दान, समाप्ति।

37. महासागरों के हिंदी में नाम

1. प्रशांत महासागर
2. अटलांटिक महासागर
3. हिंद महासागर
4. दक्षिणी महासागर
5. आर्कटिक महासागर

हिंदी विकास संस्थान, दिल्ली

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड 2022

कक्षा-नौवीं

अधिकतम अंक-200 **समयावधि-एक घंटा**

प्रतियोगी का नामः ....

पिता/संरक्षक का नामः ....

कक्ष निरीक्षक के हस्ताक्षरः ....

समान्य निर्देश-

1. इस प्रश्न-पत्र में कुल पचास प्रश्न हैं।
2. प्रत्येक प्रश्न के लिए चार अंक निर्धारित हैं।
3. सभी प्रश्न बहुविकल्पीय हैं।
4. सही उत्तर के सामने का गोला भरने पर चार अंक मिलेंगे तथा एक से अधिक गोला भरने या गलत उत्तर देने पर एक अंक काटा जाएगा।

नमूना प्रश्न-पत्र

1. 'निपात' का उदाहरण है-

   क) ऊ ख) अः ग) ही घ) तीनों

2. शब्द में स्वर रहित 'र' वर्ण को क्या कहते हैं?

   क) रेफ़ ख) पदेन ग) दोनो घ) अन्य

3. 'पथभ्रष्ट' शब्द का सामासिक विग्रह होगा-

   क) पथ में भ्रष्ट ख) पथ पर भ्रष्ट ग) पथ से भ्रष्ट घ) पथ को भ्रष्ट

4. 'निर्माण' शब्द में 'उपसर्ग' है-

   क) नि ख) निर् ग) निर घ) निर्म

5. 'पद' होता है–

   क) पूर्ण वाक्य ख) व्यंजन ग) वाक्यांश घ) शब्द

6. ‘शब्द’ कहलाता है-

क) वर्णों का मेल ख) वर्णों का सार्थक समूह

ग) मुख से निकली छोटी-से-छोटी ध्वनि घ) इनमें से कोई नहीं

7. व्युत्पत्ति के आधार पर शब्द का भेद नहीं है-

क) तत्सम ख) योगरूढ़ ग) यौगिक घ) रूढ़

8. किसी भाषा के लिखने के ढंग को क्या कहा जाता है?

क) उपभाषा ख) लिपि ग) बोली घ) वर्ण

9. कौन-सी भाषा ‘देवनागरी’ में लिखी जाती है?

क) संस्कृत ख) मराठी ग) हिंदी घ) तीनों भाषाएँ

10. ‘भाषा’ का संबंध है-

क) बोलने से ख) लिखने से ग) पढ़ने से घ) तीनों से

11. ‘विस्मयादिबोधक’ शब्द वाक्य में कहाँ होते हैं?

क) पहले ख) बीच में ग) बाद में घ) कहीं भी

12. ‘रघुपति राघव राजा राम’ पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क) यमक ख) उपमा ग) अनुप्रास घ) श्लेष

13. ‘शिक्षक’ शब्द का स्त्रीलिंग होगा-

क) सिक्षिक ख) शिक्षिक ग) शीक्षिका घ) शिक्षिका

14. ‘हस्ताक्षर’ शब्द है-

क) एकवचन ख) बहुवचन ग) दोनों घ) कोई नहीं

15. ‘तुम उधर मत जाओ।’ अर्थ के आधार पर वाक्य का भेद है-

क) सामान्य ख) निषेधवाचक ग) विस्मयवाचक घ) प्रश्नवाचक

16. ‘वाचाल’ का अर्थ है-

क) धीरे-धीरे चलने वाला ख) तेज चलने वाला

ग) बहुत अधिक बोलने वाला घ) इनमें से कोई नहीं

17. ‘नियत’ तथा ‘नियति’ शब्द का क्रमशः अर्थ है-

क) भाग्य, निश्चित ख) निश्चित, भाग्य

ग) आदत, भाग्य घ) निश्िंचत, आदत

18. ‘उत्तर’ का अर्थ है-

क) जवाब ख) बाद में ग) एक दिशा घ) तीनों

(19-21) शुद्ध शब्द का गोला भरिए-

19. क) स्त्रिँया ख) स्त्रीयाँ ग) स्त्रियाँ घ) स्त्रियाँ

20. क) दबाव ख) दबाब ग) दाबब घ) दवाब

21. 'पानी-पानी होना' मुहावरे का अर्थ है-

क) बाढ़ आ जाना ख) शर्मिंदा होना ग) बीमार होना घ) लालच आना

22. 'अकल का अंधा, गाँठ का पूरा' लोकोक्ति का अर्थ है-

क) मूर्ख परंतु धनवान ख) नेत्रहीन तथा गरीब

ग) नेत्रहीन तथा धनवान घ) मूर्ख परंतु ताकतवर

निर्देश- (23-27) नीचे दिए गए पद्यांश को ध्यान से पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

लाखों रहते जीव यहाँ पर, रखते सब अपनी पहचान।
तुम भी सोचो, हम भी सोचें, किसे कहेंगे हम इनसान?
तुम कहते हो मैं इनसान, मैं कहता हूँ मैं इनसान,
सबका हक जो मारकर बैठा, क्या उसे कहोगे तुम इनसान?
शेर साहसी होते सारे, यह जाने दुनिया सारी।
एक साहसी हो एक कायर, क्या होगी उसकी पहचान?
'मानवता' का गुण हो जिसमें, बस है 'मानव' की पहचान।
सबके दुख को अपना समझे, उसे कहेंगे हम 'इनसान'।

23. कविता में 'साहसी' किसे बताया गया है?

क) मनुष्य को ख) शेर को ग) दोनों को घ) किसी को नहीं

24. मनुष्य अपनी पहचान क्यों खोता जा रहा है?

क) मानवता के अभाव के कारण ख) दूसरों का हक छीनने के कारण

ग) दोनों कारणों से घ) इनमें से कोई नहीं

25. कविता के अनुसार मनुष्य की पहचान किससे होती है?

क) मनुष्यता से ख) साहस से ग) बुद्धि से घ) तीनों से

26. प्रयुक्त कविता में 'पूर्वकालिक क्रिया' है–

क) मारकर ख) कायर ग) कहोगे घ) समझे

27. उपर्युक्त कविता के लिए उपयुक्त 'शीर्षक' होगा–

क) इनसान ख) इनसान की पहचान

ग) मनुष्यता घ) उपर्युक्त तीनों

28. 'चार राहों का समाहार' का 'सामासिक पद' होगा–

क) चौपाल ख) चौराहा ग) चारपाई घ) चार राही

29. 'शुष्क' शब्द का विलोम है–

क) सूखा ख) गीला ग) उथला घ) आर्द्र

30. 'वह बहुत तेज़ दौड़ती है।' इस वाक्य में 'वह' शब्द का कौन-सा भेद है?

क) सर्वनाम ख) विशेषण ग) क्रिया घ) क्रियाविशेषण

31. क्रिया की विशेषता बताने वाला शब्द क्या कहलाता है?

क) विशेषण ख) क्रियाविशेषण ग) दोनों घ) इनमें से कोई नहीं

32. 'आप इधर बैठें।' अर्थ के आधार पर वाक्य का भेद है–

क) विधानवाचक ख) विधिवाचक ग) निषेधवाचक घ) संकेतवाचक

33. 'श्री' शब्द का वर्ण-विच्छेद है–

क) श् + र् + ई ख) स् + र् + ई ग) ष् + र् + ई घ) स् + र् + अ + ई

34. कम खर्च करने वाले को क्या कहते हैं?

क) कंजूस ख) लोभी ग) अपव्ययी घ) मितव्ययी

35. 'निराधार' का अर्थ है–

क) जिसका कोई आधार हो। ख) जिसका कोई आधार न हो।

ग) दोनों घ) कोई अन्य

36. 'भारत' शब्द है–

क) पुल्लिग ख) स्त्रीलिंग ग) उभयलिंग घ) इनमें से कोई नहीं

37. निम्नलिखित में 'बहुवचन' शब्द है-

क) पानी ख) आँसू ग) जंगल घ) इनमें से कोई नहीं

38. पंचानन में समास है–

क) अव्ययीभाव ख) बहुव्रीहि ग) द्वंद्व घ) कर्मधारय

39. 'कल' शब्द का आशय है–

क) बीता हुआ दिन ख) आने वाला दिन

ग) मशीन घ) उपर्युक्त तीनों

40. 'व्यायाम' शब्द कैसे बना है?

क) वि + आयाम ख) व्या + याम ग) व्याय + अम घ) व्यय + आम

41. 'कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

क) अनुप्रास ख) रूपक ग) यमक घ) श्लेष

42. 'अमृता बोल रही है और महक लिख रही है।' रचना के आधार पर वाक्य बताइए–
क) सरल ख) संयुक्त ग) मिश्रित घ) तीनों

43. 'आपकी यात्रा मंगलमय हो।' अर्थ की दृष्टि से वाक्य का भेद है–
क) विधानवाचक ख) विधिवाचक ग) इच्छावाचक घ) संकेतवाचक

44. 'क्षुधा' शब्द का 'वर्ण-विच्छेद' है–
क) छ्+उ+क्+ध्+आ ख) क्+भ्+उ+ध्+आ
ग) क्+ष्+उ+ध्+आ घ) क्+श्+उ+ध्+आ

45. 'शरणागत' शब्द में कौन-सा समास है?
क) तत्पुरुष ख) कर्मधारय ग) अव्ययीभाव घ) बहुव्रीहि

46. 'अव्ययीभाव समास' का उदाहरण है–
क) प्रत्येक ख) अनुरूप ग) सादर घ) तीनों

47. 'आँखें खुलना' मुहावरे का अर्थ है–
क) नींद से उठना ख) होश आना ग) बेहोश होना घ) उपर्युक्त तीनों

48. 'शारीरिक' शब्द में प्रत्यय है–
क) इक ख) इम ग) इत घ) ईय

49. 'भूत्सर्ग' शब्द का संधि-विच्छेद है–
क) भू+सर्ग ख) भूत+सर्ग ग) भू+उत्सर्ग घ) भु+त्सर्ग

50. 'आरोह' शब्द का विलोम है–
क) समारोह ख) अवरोह ग) गिरोह घ) तीनों

उत्तर-संकेत

1. ग	11. ख	21. ख	31. ख	41. ग
2. क	12. ग	22. क	32. ख	42. ख
3. ग	13. घ	23. ख	33. क	43. ग
4. ख	14. ख	24. ग	34. घ	44. ग
5. ग	15. ख	25. क	35. ख	45. क
6. ख	16. ग	26. क	36. क	46. घ
7. क	17. ख	27. घ	37. ख	47. ख
8. ख	18. घ	28. ख	38. ख	48. क
9. घ	19. घ	29. घ	39. घ	49. ग
10. घ	20. क	30. क	40. क	50. ख

ध्यान दें–इस अभ्यास-पत्रिका में किसी भी प्रकार की त्रुटि पाए जाने पर सूचित करने की कृपा करें।